"लेखा"

- प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि । लगा कित कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ।

अर्थ:- हे प्राणी ! तू जगत में परमात्मा के नाम का लाभ लेने के लिए आया है । तू किस खुआरी वाले काम में उलझा हुआ है ? तेरी जिंदगी की सारी रात खत्म होती जा रही है ।

कुदम करे पसु पंखीआ दिसै नाही काल । उते साथि मनुख है फाथा माइआ जालि । मुकते सेई भालीअहि जि सचा नाम समालि ।

अर्थः- पशु कलोल करते हैं, पंछी कलोल करते हैं । पशु और पंछी को मौत नहीं दिखती । पर मनुष्य भी उसके साथ ही जा मिला है पशु - पक्षी की तरह इसे भी मौत याद नहीं, और यह माया के जाल में फंसा हुआ है । माया के जाल से बचे हुए वही लोग दिखते हैं जो परमात्मा का सदा कायम रहने वाला नाम हृदय में बसाते हैं ।

जो घर छडि गवावणा सो लगा मन माहि । जिथै जाइ तुध वरतना तिस की चिंता नाहि । फाथे सेई निकले जि गुरु की पैरी पाहि ।

अर्थः- हे प्राणी ! जो ये घर छोड़ के सदा के लिए चले जाना है, वह तुझे अपने मन में प्यारा लग रहा है । और जहां जा के तेरा वास्ता पड़ना है, उसका तूझे रत्ती भर भी फिक्र नहीं । सभी जीव माया के मोह में फंसे हुए हैं, इस मोह में फंसे हुए वही बंदे निकलते हैं जो गुरु के चरणों में पड़ जाते हैं ।

कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाइ । चारे कुंडा भालि के आइ पइआ सरणाइ । नानक सचे पातिसाहि डुबदा लइआ कढाइ । (5-43)

अर्थः- माया का मोह है ही बड़ा प्रबल, इस में से गुरु के बिना और कोई बचा नहीं सकता । गुरु के बिना ऐसी समर्था वाला कोई दिखाई नहीं देता । मैं तो सारी सृष्टि ढूंढ के गुरु की शरण आ पड़ा हूँ । हे नानक कह सच्चे पातशाह ने, गुरु ने मुझे माया के मोह समुंदर में डूब रहे को निकाल लिया है ।

• रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै । आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै । (483 कबीर)

अर्थः- हे भाई ! काजी रोजा रखता है रोजों के आखिर में ईद वाले दिन अल्लाह के नाम पे कुर्बानी देता है, पर अपने स्वाद की खातिर ये) जीव मारता है । अपने ही स्वार्थ को आँखों के आगे रख कर औरों की परवाह नहीं करता, इसलिए, ये सब उद्यम व्यर्थ में झख मारने वाली बात ही है ।

- हक पराईआ नानका उस सुअर उस गाई । गुरु पीर हामा ता भरे जा मुरदार न खाही । गली भिसति न जाइऐ छुटै सच कमाई । (1-141)

अर्थः- हे नानक ! पराया हक मुसलमान के लिए सूअर है और हिन्दू के लिए गाय है । गुरु पैग़ंबर तभी सिफारिश करते हैं अगर मनुष्य पराया हक ना मारे । निरी बातों से बहिश्त नही जाया जा सकता सच को ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"